ईश्वर ने तुम्हें एक चेहरा दिया है और तुम अपने मतलब के लिए उसे बदल लेते हो....

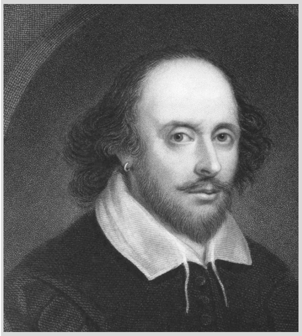

महानता से आप कभी भी घबराइये नहीं, कुछ लोग तो महान पैदा होते हैं, कुछ महानता को अपने दम पर हांसिल करते हैं और कुछ लोगों के ऊपर महानता को थोप दी जाती है। जिस तरह शरारती बच्चों के लिए मक्खियाँ होती हैं और वो उन्हें मारता है, वैसे ही हम ईश्वर के लिए हम होते हैं, वो भी हमें अपने मनोरंजन के लिए मारते हैं। जिस तरीके से तुम अपने विचारों में महान रहे हो, उसी तरह अपने कर्मों में भी महान बनो।

विलियम शेक्सपियर

■ सितारों के अन्दर इतनी शक्ति नहीं, जो हमारे जीवन का फैसला कर सकें, बल्कि हमारा भाग्य खुद हमारे हाथों में है।

■ **नाम में रखा क्या है, अगर हम गुलाब के फूल को किसी और नाम से पुकारें, तो वो वैसी ही खुशबू जैसी उसकी खुशबू है।**

■ नर्क खाली है और सारे राक्षस यहीं पर हैं।

■ **मेरी सहायता या उपहार अथाह समुद्र की तरह अनंत है और मेरा प्रेम भी, मैं जितना भी तुम्हे दूँगा, उतना ही हम दोनों को मिलता जाएगा।**

■ अपने लिए दूसरों से मदद की उम्मीद रखना ही सारी बुराइयों की जड़ है।

■ **छोटी सी एक मोमबत्ती का प्रकाश कितनी दूर तक जाता है, इसी तरह इस बुरी दुनिया में एक अच्छाई कुछ समय तक ही प्रकाशमान रह पाती है।**

■ खाली बर्तन ही सबसे सबसे ज्यादा शोरगुल मचाते हैं।

■ **अगर अंत भला हो, तो समझो सब भला है।**

■ एक मूर्ख व्यक्ति अपने आपको बुद्धिमान समझता है, लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति खुद को मूर्ख समझता है।

■ **डरपोक व्यक्ति अपनी मौत से पहले कई बार मरते हैं, लेकिन एक साहसी व्यक्ति मौत का स्वाद बस एक ही बार चखता है।**

■ पढ़ने के विरुद्ध जो तर्क देता है, समझो वह कितने अच्छे से पढ़ा हुआ है।

■ **उस वक्त मैंने अपने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।**

■ झूठी लड़ाई लड़ने में कोई सच्ची वीरता नहीं होती।

■ **सभी से तुम प्यार करो और कुछ पर विश्वास करो, किसी के साथ कोई गलत काम न करो।**

■ ना किसी से उधार लो, ना ही किसी को उधार दो।

■ **अगर प्यार के विषय में बोल रहे हो तो, धीमे स्वर में बोलो।**

■ जिस तरह के हम बने हैं, उसी तरह के हम रहें।

■ **शैतान अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वेदों का सहारा ले सकता है।**

■ सबसे बढ़कर ये जरूरी होता है कि हम खुद से अपने आप में सही रहें।

■ **जब हम जन्म लेते हैं, तब हम रोते हैं कि क्योंकि हम मूर्खों के इस विशाल मंच पर जो आ गए हैं।**

■ बिना विचारों से भरे शब्द कभी स्वर्ग को नहीं जाते।

■ **जैसा कर सकते हो, तो वैसा ही बोलो और जैसा बोलो, तो वैसा ही करो।**

■ एक सुनहरा युग हमारे सामने है, न कि हमारे पीछे।

■ **हमारे जीवन में कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं होता, बस उसे हमारी सोच बनाती है।**

■ ये हम अच्छे से जानते हैं कि हम क्या हैं, लेकिन यह नहीं कि हम क्या हो सकते हैं।

■ **जब इंसान के जीवन में दुःख आता है, तो एक अकेले नहीं आता, बल्कि पूरी फौज के साथ आता है।**

■ अपने शब्दों पर ध्यान दीजिये, वरना खुद से आप अपने भाग्य खराब कर लेंगे।

■ **हमेशा संदेह कसूरवार को सताता रहता है।**

■ सच्ची मोहब्बत का रास्ता कभी भी आसान नहीं होता।

■ **किसी महान कार्य को करने के लिए थोड़ी–बहुत गलतियाँ भी करिए।**

■ **जब एक पिता अपने पुत्र को कुछ देता है, तो दोनों हँसते हैं, लेकिन जब पुत्र अपने पिता को कुछ देता है, तो दोनों रोते हैं।**

■ समय के साथ जिससे हम अक्सर डरने लगते हैं, उससे हम नफरत करने लगते हैं।

■ **बुद्धिमान व्यक्ति धीरे–धीरे आगे की ओर बढ़ते हैं, जो जल्दीबाजी में आगे बढ़ने की गलती करते हैं, वो हमेशा गिर जाते हैं।**

■ चाँद की कसम कभी मत खाओ, क्यूंकि वो हमेशा बदलता रहता है।

■ **जब वह बहादुर था, तब मैंने उसका सम्मान किया, लेकिन जब वो अधिक महत्त्वाकांक्षी हो गया, तो मैंने उसे मार दिया।**

■ ये संसार एक रंगमंच की तरह है और यहाँ सभी स्त्री–पुरुष मात्र कलाकार की तरह हैं, उनका आना और जाना होता है और एक व्यक्ति अपनी पूरी ज़िन्दगी में कई किरदारों को निभाता है।

■ **प्यार अंधा होता है और प्यार में डूबे लोगों को कुछ नजर नहीं आता।**

■ मैं इस दुनिया में किसी भी चीज से उतना प्यार नहीं करता, जितना मैं सिर्फ तुमसे प्यार करता हूँ, क्या यह बात अजीब नहीं लगती ?

■ **मैंने जब तुमको देखा, तभी से मैं प्यार करने लगा। तुम मुस्कुराई थी, क्योंकि तुम ये बात जान गई थी।**

■ मैं तुम्हें बुद्धिमता की लड़ाई के लिए ललकारता हूँ, लेकिन मुझे तो दिख रहा है कि तुम निहत्थे हो।

■ **अगर तुम प्यार करते हो और तुम्हें उससे कष्ट मिलता है, तो और ज्यादा प्यार करो।**

■ वे लोग प्रसन्न हैं, जो अपने ऊपर लगे कलंक को जानकर उस कलंक को मिटाने में लग जाते हैं।

■ **एक मिनट देर से आने से अच्छा है, कि आप तीन घंटे पहले ही आ जाएं।**

■ इंसान का रोना, दुःख की गहराई को कम कर देता है।

■ **जिस तरीके से तुम अपने विचारों में महान रहे हो, उसी तरह अपने कर्मों में भी महान बनो।**

■ हमेशा ईर्ष्या से सावधान रहिये, क्योंकि ये वो दैत्य है, जो उसी शरीर का तिरस्कार करता है और धोखा देता है, जिस पर वो पलता है।

■ **एक पुरानी कहावत है, जो मुझ पर भी लागू होती है, जो खेल आप खेल ही नहीं रहे हैं, उसमें आप हार ही नहीं सकते।**

■ साधारण और विलक्षण होने की इच्छा जैसी सामान्य बात और कुछ नहीं है।

■ **जिस तरह शरारती बच्चों के लिए मक्खियाँ होती हैं और वो उन्हें मारता है, वैसे ही हम ईश्वर के लिए हम होते हैं, वो भी हमें अपने मनोरंजन के लिए मारते हैं।**

■ इंसान के लिए मौत एक भयानक चीज है।

■ **हर इंसान को अपने आचरण का परिणाम धैर्यपूर्वक रहकर सहना चाहिए।**

■ जिस तरह मछलियाँ पानी में रहती हैं और अपनी भूख मिटाने के लिए छोटी मछलियों को खा जाती हैं, उसी तरह इंसान जमीन पर रहता है और बड़े इंसान छोटे वालों को खा जाते हैं।

■ **आप सभी लोगों की सुनें, लेकिन अपनी बात कुछ ही लोगों से कहें।**

■ मेरा कहना मात्र इतना है कि वहाँ अन्धकार नहीं, बल्कि अज्ञानता है।

■ **मेरा मानना है कि यह फैशन इंसानों से ज्यादा कपड़े फाड़ता है।**

■ मैं हर उस व्यक्ति की तारीफ करूँगा, जो मेरी तारीफ करेगा।

■ **वही पिता बुद्धिमान है, जो अपनी संतान को अच्छी तरह से जानता है।**

■ कई बार तो फांसी, एक बुरी शादी से बचा लेती है।

■ **कोई भी विरासत ईमानदारी से समृद्ध नहीं है।**

■ जो हो चुका होता है, उसे कभी बदला नहीं जा सकता।

■ **अच्छाई की प्रचुर मात्रा बुराई में बदल जाती है।**

■ महानता से आप कभी भी घबराइये नहीं, कुछ लोग तो महान पैदा होते हैं, कुछ महानता को अपने दम पर हांसिल करते हैं और कुछ लोगों के ऊपर महानता को थोप दी जाती है।

■ **ईश्वर ने तुम्हें एक चेहरा दिया है और तुम अपने मतलब के लिए उसे बदल लेते हो।**

■ तुम अगर मुझसे मोहब्बत करोगे या नफरत दोनों मेरे पक्ष में ही है। अगर तुम मुझसे मोहब्बत करते हो, तो मैं तुम्हारे दिल में रहूँगा और अगर नफरत करते हो, तो भी मैं तुम्हारे दिमाग में ही रहूँगा।

■ **वफादार दोस्तों को पाना बेहद मुश्किल होता है।**

■ शब्द, हवा की तरह आसानी से बहते हैं।

■ **अगर हर काम करना उतना ही आसान होता, जितना की यह जानना कि क्या करना अच्छा है, तो ना शवगृह होते, ना ही गिरिजाघर होते और ना ही गरीबो के झोंपड़े, न ही महल।**

■ खुद की प्रशंसा पाने के लिए दूसरों की प्रशंसा करें।

■ **मैं अपने उत्तर से आपको संतुष्ट करने के लिए बाध्य नहीं हूँ।**

❁❁

UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Hindi Literature
Research Link - 165, Vol - XVI (10), December - 2017, Page No. 8-9
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

भारतीय दर्शन : परम्परा एवं विकास - २

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय दर्शन की परम्परा एवं विकास पर विचार किया गया है। इसकी पूर्व पीठिका पिछले अंक में दी जा चुकी है। एक तरह से प्रस्तुत सामग्री उस विचार को आगे बढ़ाती है। यह कि हिन्दू धर्म में दर्शन की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। वैदिक दर्शनों में षड्दर्शन सर्वाधिक प्राचीन है। गीता का कर्मवाद भी इनके समकालीन है। षड्दर्शन को आस्तिक दर्शन भी कहा जाता है। ये दर्शन वेद की सत्ता को पूर्णतः स्वीकार करते हैं। षड्दर्शन के अंतर्गत न्यायदर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्यदर्शन, योगदर्शन, मीमांसा दर्शन व वेदान्त दर्शन आते हैं। इनके अतिरिक्त लोकायत तथा शैव एवं शाक्त दर्शन भी हिन्दू दर्शन के अभिन्न अंग हैं।

डॉ.विनोद कालरा

ईसा के जन्म के पूर्व और बाद की एक दो शताब्दियों में अनेक दर्शनों की समानान्तर धाराएं भारतीय विचार भूमि पर प्रवाहित होने लगी। बौद्ध और जैन दर्शन की धाराएँ भी इनमें सम्मिलित होने लगीं।

भारत में दर्शन : भारत में दर्शन किन परिस्थितियों में अस्तित्व में आया, इसके सम्बन्ध में प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु इतना स्पष्ट है कि उपनिषद काल में दर्शन एक पृथक् शास्त्र के रूप में विभाजित होने लगा था। भारत में दर्शन का आविर्भाव वैदिक काल से ही माना जाता है। वैदिक काल में ही वेदों और उपनिषदों की रचना हुई। भारतीय मान्यता के अनुसार वेद किसी मनुष्य द्वारा नहीं लिखे गए। ये वह ज्ञान है, जो स्वयं भगवान में चार ऋषियों को सुनाया था। वेद ईश्वर की वाणी है, जिसका अर्थ है, ज्ञान। ज्ञान वह प्रकाश है जो अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करता है। वेद इतिहास का ऐसा स्रोत हैं, जो पौराणिक ज्ञान–विज्ञान का भण्डार है। वेद शब्द संस्कृत के विद् शब्द से निर्मित है। इस एक शब्द में ही संपूर्ण ज्ञान समाहित है। प्रारंभ में वेद एक ही था, किन्तु सुविधा हेतु इसके चार भाग दिए गए हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। 'शतपथ ब्राह्मण' में लिखा है – अग्नि, वायु और सूर्य ने तपस्या की और चारों वेदों को प्राप्त किया है।

ऋग्वेद : ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति सम्बन्धी मंत्रों का संकलन है। यह सृष्टि का प्रथम वेद है। इसकी रचना 1500–1200 ईसा पूर्व स्वीकार की गई है। इसमें धरती की भौगोलिक स्थिति के दर्शन के साथ–साथ कृषि सम्बन्धी विवरण और ऋतुओं का भी वर्णन किया गया है। इसके अर्न्तगत, देवताओं के आह्वान मंत्र, उनकी प्रार्थना, स्तुति और देव लोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें कुल 10 अध्याय हैं, जिन्हें मण्डल भी कहा जाता है। इन अध्यायों में कुल 1028 मंत्र अर्थात् ऋचाएँ हैं।

यजुर्वेद : यजुर्वेद, हिन्दू धर्म का महत्वपूर्ण धर्म ग्रंथ है। इसमें यज्ञ की वास्तविक प्रक्रिया और विधियों के लिए गद्य और पद्य मंत्र है। इसमें के 663 मंत्र हैं। फिर भी यह ऋग्वेद से अलग ग्रंथ माना जाता है, क्योंकि मुख्य रूप से यजुर्वेद एक गद्यात्मक ग्रंथ है। इसकी दो शाखाएँ है – दक्षिण भारत में प्रचलित कृष्ण यजुर्वेद और उत्तर भारत में प्रचलित शुक्ल यजुर्वेद शाखा। यजुर्वेद का रचना स्थल कुरुक्षेत्र माना जाता है। इसका रचना काल 1400 से 1000 ईसा पूर्व का माना जाता है। इसमें 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं। इसमें तत्व ज्ञान का चित्रण किया गया है।

सामवेद : गीत संगीत प्रधान 'सामवेद' भारत के प्राचीनतम ग्रंथ वेदों से एक हैं। प्राचीन आर्यों द्वारा साम गायन किया जाता था। आकार की दृष्टि से यह वेद चारों वेदों से छोटा है। इसके 1975 मंत्रों में से 69 मंत्रों को छोडकर सभी मंत्र 'ऋग्वेद' के हैं। इसमें केवल 17 मंत्र 'अर्थववेद' और 'यजुर्वेद' के गाए जाते हैं, फिर भी इसकी प्रतिष्ठा सर्वाधिक है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि 'वेदानां सामवेदोऽस्मि संभवतः' इसीलिए यह वेद अत्यन्त प्रतिष्ठित है। यद्यपि सामवेद छोटा है, पर एक प्रकार से यह वेदों का सार रूप है। सभी वेदों के चुने हुए अंश इनमें सम्मिलित हैं। 'साम' का अर्थ है, रूपांतरण एवं संगीत की उपासना। इन मंत्रों की मुख्य विशेषता गेयता है।

अथर्ववेद : यह वेदों में चौथा वेद है। इसमें देवताओं की स्तुति के साथ जादू, चमत्कार, चिकित्सा, विज्ञान और दर्शन के भी मंत्र हैं। अथर्ववेद संहिता के बारे में कहा गया है कि – जिस राजा के राज्य में अथर्ववेद जानने वाला विद्वान शक्ति स्थापना के धर्म में निरत रहता है, वह राष्ट्र उपद्रव रहित होकर निरंतर उन्नति करता जाता है। अथर्ववेद में भूगोल, खगोल, वनस्पति, विद्या, असंख्य जड़ी बूटियाँ, आयुर्वेद, गंभीर रोगों का निदान और उनकी चिकित्सा, अर्थ शास्त्र के भौतिक सिद्धांत, राजनीति के गहन तत्व, राष्ट्रभूमि और भाषा की महिमा, शल्य चिकित्सा, मृत्यु को दूर करने के उपाय, प्रजनन विज्ञान और असंख्य लोकोपकारक विषयों का निरूपण 'अथर्ववेद' में है। 'अथर्ववेद' को ब्रह्मवेद भी कहते हैं। इसके 20 अध्याय है और 5687 मंत्र है।

श्रीमद्भगवदगीता : श्रीमद्भगवदगीता, विश्व का पवित्रत्तम व श्रेष्ठतम ग्रंथ माना जाता है। धर्मग्रंथों के अनुसार –मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को भगवान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। यह महाभारत के भीष्मपर्व के अन्तर्गत दिया गया एक उपनिषद है। इसमें एकेश्वरवाद,

अध्यक्ष (हिन्दी विभाग), कन्या महाविद्यालय, जालन्धर (पंजाब)

कर्म योग, ज्ञान योग और भक्तियोग की बेहद सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है। इसमें देह से परे आत्मा का निरूपण किया गया है। भगवद्गीता की पृष्ठभूमि में महाभारत का युद्ध था। इसमें अर्जुन एक साधारण मनुष्य की तरह समरांगण में अपने सामने आने वाली समस्याओं में निराश व अनिश्चय की स्थिति में आ गए थे। ऐसे समय में गीता सार बुद्धि की सीमाओं से परे मनुष्य क्या अनुभव कर सकता है, उसकी एक झलक भी दिखा देता है।

श्रीमदभगवद्गीता बदलते सामाजिक परिदृश्यों में अपनी महत्ता को बनाए हुए है और इसी कारण तकनीकी विकास ने इसकी आवश्यकता को बढ़ा कर उसे बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है। श्रीमदभगवद्गीता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में धर्म से अधिक जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बेहद ख्यति प्राप्त कर चुकी है। विश्व के सभी धर्मों की प्रसिद्ध पुस्तकों में शामिल यह पुस्तक निष्काम कर्म के संदेश का विस्तार कर रही है।

ऐसा माना जाता है कि हिन्दू धर्म के इस पवित्रतम ग्रंथ की रचना 5000 वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्यास द्वारा रची गई। इसका रचना स्थल कुरुक्षेत्र है। यह महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तर्गत दिया गया उपनिषद है। इसके कुल 18 अध्याय है। गीता में एकेश्वरवाद, कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग का प्रतिपादन हुआ है।

श्रीमदभगवद्गीता में कर्म की अवधारणा : कर्म तीन प्रकार के होते हैं – एक संचित कर्म, जो वर्तमान तक दिया गया है। दूसरा प्रारब्ध कर्म अर्थात् जो हम पहले का भोग रहे हैं, साथ ही जो अभी चल रहा है, वह क्रियामाण कर्म कहलाता है। बाहरी रूप रेखा में कर्म तीन प्रकार माने गए हैं – सात्विक, राजसी और तामसी। इन तीनों कर्मों का प्रभाव दृश्य संसार में दिखाई देता है। दृश्यमान कर्म भौतिक कहलाता है और अदृश्य कर्म आध्यात्मिक। जो कर्म मर्यादा से किसी को दुःख दिए बिना पूरा हो जाता है, उसे सात्विक कर्म कहते हैं। ये कर्म प्रारंभ से अंत तक समय की गति से भर दिया जाता है। जो कर्म किसी उद्देश्य विशेष से किया जाता है, किसी के प्रति चिंता नहीं की जाती, कोई मरे या जिए – कोई लेना देना नहीं होता। जहाँ कर्म के साथ क्रोध अथवा प्रतिकार या प्रतिस्पर्धा की भावना प्रधान हो, उसे राजसी धर्म कहा जाता है। राजनीति करना, शत्रुता समाप्ति, भोजन समाप्ति, नौकरी प्राप्ति अथवा व्यापार करने के समय धन की बढ़ौतरी के लिए किया जाने वाले कर्म भी राजसी कर्म के अन्तर्गत ही आता है। तामसिक कर्म वे कहलाते हैं, जो देखने में कुछ और होते है और उनका रूप कुछ और ही होता है। ये कर्म बिना किसी उद्देश्य के किए जाते हैं, उस कर्म में हानि भी हो सकती है और लाभ भी।

श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म और धर्म के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। वहाँ पर भी वर्णित है कि मनुष्य का न केवल अपने परिवार के प्रति कर्तव्य है, अपितु समाज और राष्ट्र के प्रति भी उसे सदैव समर्पित रहा है। सत्य की सर्वदा जीत होती है, असत्य पराजित होता है।

पूर्वीय दर्शन : एक सकारात्मक सोच – भारतीय दर्शन के अन्तर्गत यदि विचार किया जाये, तो सभी धर्मों में कमोबेश एक ही सत्य का प्रतिपादन हुआ है। कोई भी धर्म ग्रंथ सत्य, अहिंसा, न्याय, भ्रातृत्व से परे हट कर धर्म की व्याख्या नहीं करता। जो संदेश श्रीमद्भगवद्गीता का है, लगभग वही बौद्ध धर्म में भी व्याख्यायित किया गया। बौद्ध धर्म में बौद्ध का अर्थ जागृत होता माना गया है। 2500 वर्ष पूर्व उद्भूत इस धर्म के प्रचारक महात्मा बुद्ध (सिद्धार्थ) को 35 वर्ष की आयु में ही ज्ञान प्राप्त हो गया था। उन्होंने अपने अनुभवों के माध्यम से लोगों को सही मार्ग दिखाया। प्रश्न यह है कि क्या बौद्ध एक धर्म मात्र है। नहीं, यह धर्म से परे एक दर्शन है, एक जीवन मार्ग है, जो मनुष्य को लौकिक तथा अलौकिक के बीच के अन्तर को समझता है। बौद्ध धर्म में जीवन को दुरूखों का नाम दिया जाता है और इस दुःख का कारण है, उम्मीद। इन दुःखों पर विजय प्राप्त करके ही वास्तविक प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है। बौद्ध धर्म में आठ मार्गो की चर्चा की गई है। ये आठ मार्ग है – नैतिकता, संयम, सुविचार, सत्कर्म, सम्मान, प्रेम, अहिंसा व सत्य। इन मार्गो पर अग्रसर हो कर ही मनुष्य श्रेष्ठत्व को प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार जैन धर्म की शिक्षाएँ अथवा उद्देश्य भी श्रीमद्भगवद्गीता व बौद्ध धर्म के अनुरूप ही हैं। जैन धर्म भी सत्यवाचन, आत्मनियन्त्रण, आत्मज्ञान, सत्यकर्म, अहिंसा, प्रेमभाव पर बल देता है और लोभ, अभिमान व नफरत को त्यागने पर बल देता है।

मध्यकाल पर एक दृष्टिपात किया जाए तो इस समय के सर्वाधिक लोकप्रिय व अद्भुत ग्रंथ 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' हमारे समक्ष आता है, जिसे आदि ग्रंथ के नाम से भी अभिहित किया जाता है। 1430 पृष्ठों में लिखे गए इस महान ग्रंथ के सम्पादक गुरु परम्परा के 5वें गुरु अर्जुन देव जी है। इसमें 5864 पद है और सन् 1469 से लेकर 1758 तक के समय की वाणी इसके संकलित है। गुरुओं की वाणी के साथ शेष कवियों की वाणी को सम्पादित करने का कार्यकार भाई गुरदास को सौंपा गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 7 गुरुओं 38 संतों, 11 मुस्लिम सूफी भाटों व कवियों की वाणी है इसमें गुरु नानक देव जी के 974 पद, गुरु अंगद देव जी के 62, गुरु अमरदास जी के 907, गुरु रामदास जी के 679, गुरु अर्जुनदेव जी के 2218, गुरु तेग बहादुर जी के 115 व गुरु गोबिन्द सिंह जी का 1 पद संकलित है। इन महान गुरुओं के अतिरिक्त कबीर, नामदेव, रविदास, त्रिलोचन, धन्ना, साई, जयदेव, पीपा, सूरदास, परमानंद, सदना, बेनी, रामानंद भीकने, मरदाना, कक, सुन्दर, सत्राद्य, जलाशर, कीरत, बल, मथुरा, नल, भाल, गयंद व कवियों की वाणी आदि ग्रंथ में दर्ज है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी सत्य, नाम स्मरण, गुरु के प्रति आराध्य भाव, नैतिकता, परोपकार आदि गुणों पर बल दिया गया है। इस ग्रंथ में कर्म योग की अवधारणा भी प्रतिपादित की गई है। और मनुष्य को उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया है। इस ग्रंथ मे जाति पाँति के भेदभाव का खण्डन कर लंगर प्रथा का प्रसार किया और संसार के सभी मनुष्यों को बराबरी का स्थान दिया। यह इस ग्रंथ की अत्यन्त महत्वपूर्ण देन हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि धर्म का अर्थ अपने आराध्य देवों की मंदिरों, गुरुद्वारों अथवा मस्जिदों में पूजा करना नहीं, न ही तीर्थ यात्रा पर जाना है। अपितु धर्म का वास्तविक अर्थ सामुदायिक समाज को संचालित करने वाली वह नियमावली है। जो कभी परिवर्तित न हो। धर्म का अर्थ हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम या ईसाई धर्म नहीं, मानवता मात्र है। दर्शनों का उपदेश वैयक्तिक जीवन के समानार्जन और परिष्करण के लिए अधिक उपयोगी है। आध्यात्मिक पवित्रता एवं उन्नयन बिना दर्शनों के दुर्लभ है। दर्शन ही हमें प्रमाण और तर्क के माध्यम से अंधकार में दीप ज्योति प्रदान करके हमारा मार्ग दर्शन करने में समर्थ होता है। अतः मनुष्य को अपने परम लक्ष्य और पुरुषार्थ की प्राप्ति दर्शन से ही हो सकती है।

चिंतन :

राजेन्द्र माथुर

हर रोने वाला, छाती पीटने वाला, आत्महत्या की धमकी देने वाला सच्चा नहीं होता। कोई लड़का अगर इसलिए घर से भाग जाए कि उसे सिनेमा नहीं देखने दिया गया, तो इससे यह साबित नहीं होता कि सिनेमा देखना बहुत आदर्शवादी कार्य है। मामूली कहासुनी के बाद कोई अगर रेल की पटरी पर जाकर सो जाए, तो वह बदला लेने की बहुत निम्न भावना से प्रेरित होकर काम कर रहा है। अनशन भी इसी तरह का एक ब्लेकमेल है, जो कभी इस्पात कारखाने के लिए, कभी प्रांत निर्माण के लिए, कभी भाषा के लिए, तो कभी इस–उस के लिए काम में लाया गया है। वह प्रजातंत्र की भावना के प्रतिकुल है। अगर देश की राजनैतिक पार्टियां कभी एक आचरण संहिता बनाने के लिए राजी हो सकें, तो उसमें अनशन पर सबसे पहले पाबंदी लगाई जानी चाहिए।

अनशन और ब्लेकमेलिंग

इन दिनों देश में अनशनों का जो तांता लगा हुआ है, वह भयावह है। ऐसी जिद्दी अहिंसा के बजाय तो खुली और घोषित हिंसा ज्यादा अच्छी। लेकिन ये अनशन भारत के चरित्र के बिल्कुल अनुरूप हैं। बाकी मुल्क अगर दूसरों को मार कर सच्चे बनते हैं, तो भारत रोकर सच्चा बनता है। चीन अगर एटम बम फोड़ कर अपनी धाक जमाता है (समरथ को नहीं दोष गुसाईं) तो भारत नेफा और लद्दाख के घाव दिखा–दिखा कर सहानुभूति बटोरना चाहता है (गरीब की 'हाय' बेकार नहीं जाती) चीन में अगर रेड गार्ड लूटमार करके त्रस्त कर रहे हैं, तो भारत में विविध प्रकार के अनशनों से अराजकता फैल रही है। क्रांतिकारी चीन आज फन उठाये हुए पागल नाग की तरह है, जो दुनिया को डसना चाहता है। लेकिन चीन का सांप एक फन वाला है, जबकि भारत के सांप के हजार फन हैं। आन्दोलन और अनशन के हजार फन वाले नाग आज दिशाहीन भारत को डस रहे हैं। अब हमें मालूम हुआ कि 17 साल तक नेहरू ने सचमुच कालिया मर्दन किया था। **हे ईश्वर, इन अनशनकारियों को बुद्धि दे, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। हिंसा करने वाले मानते हैं कि जिसकी लाठी उसकी भैंस! लेकिन, ये अनशन करने वाले उनसे क्या कम हैं। वे मानते कि जिसका अनशन, उसकी भैंस। क्या कोई समझदार आकर कहेगा कि भैंस पर कब्जा करने के ये दोनों तरीके गलत हैं। समरथ कई बार दोषी होता है और रोने वाला कई बार झूठा होता है। अगर समरथ से टक्कर न ली जाए, तो वह दोष करता चला जाता है और अगर रोने वाले को हमेशा सच्चा माना जाए, तो वह हर घड़ी झूठमूठ रोता रहता है। अनशन आज लाठी बन गया है और नैतिक रूप से वह लाठी से भी अधिक हेय है।**

भारत में कितनी समस्याओं पर कभी न कभी अनशन आदि हो चुके हैं। पोत्ती श्रीरामुलू ने मद्रास के बंटवारे के लिए आमरण अनशन किया और आन्ध्र बन गया। मास्टर तारासिंह ने 1961 में एक लम्बा अनशन किया, लेकिन नेहरू ने जरा भी फिक्र नहीं की और अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने के उपलक्ष्य में मास्टरजी को गुरूद्वारे के जूते उठाने पड़े। फिर संत फतेहसिंह ने अनशन और आत्मदाह की चेतावनी दी और पंजाबी सूबा बन गया। लेकिन पंजाबी सूबे के विरोध में कई महात्माओं ने भी अनशन किये और शायद कुछ लोग आत्मदाह भी कर लेते (अगर दो संत एक दूसरे के खिलाफ अनशन करें, तो सत्य किसे साथ माना जाएगा?) हिंदी के विरोध में कई मद्रासियों ने अपने बदन में आग लगा ली और हिन्दी थम गई। और अब इस साल सर्वोदयी अमृतराव ने आन्ध्र में इस्पात कारखाने के लिए अनशन किया है (जी हाँ, खादी या स्वदेशी के लिए नहीं) और पुरी के शंकराचार्य गौवध निषेध के लिए अनशन कर रहे हैं। यहाँ अनशन जरा विलम्बित है। अगर देश के चारों शंकराचार्य उस जमाने में अनशन करते, जब देश पर मुस्लिम शासन कायम हुआ ही था, तो उसका शायद जबर्दस्त असर होता, जैसे

गाँधी जी के अनशनों का ब्रिटिश सरकार पर हुआ था। **लेकिन देश के धर्मगुरू सैकड़ों वर्षों में पहली बार शासन के राजनैतिक निर्णयों को प्रभावित करना चाह रहे हैं। क्या वे गौ रक्षा की प्रबल भावना से प्रेरित हैं या देश का शक्तिशून्य उन्हें निमंत्रित कर रहा है? क्या यह सच नहीं है कि ससोपा, वामपंथी, कम्युनिस्ट और धार्मिक गौ रक्षक आजकल अराजकता की बहती गंगा में हाथ धो रहे हैं या धोना चाह रहे हैं?**

इस सिलसिले में सबसे बड़ा तर्क यह है कि महात्मा गाँधी ने भी अनशन किया था। जी हाँ, लेकिन गाँधीजी के अनशन के तरीके से ही सब लोग कहाँ तक सहमत थे। नेहरू को इन अनशनों की आध्यात्मिक ध्वनि से हमेशा ऐतराज रहा। गाँधी जी के पक्ष में सबसे बड़ी दलील यही हो सकती है कि उनके अनशन देश की जिद्द के, उसके संकल्प के मूर्तिमान प्रतीक थे। भारतीय राष्ट्रीयता और अंग्रेजी साम्राज्य की इच्छा–शक्ति के बीच सीधी टक्कर के वे प्रतीक थे। यदि युद्ध में सब कुछ जायज है, तो अहिंसक युद्ध में भी सब कुछ जायज है। लेकिन इन अनशनों का आज क्या मतलब है, जब प्रजातंत्र ने हमें सरकार बदलने के अधिकार दे रखे हैं ? आज अगर अहिंसा के स्तर पर हम अनशन करते हैं, तो इसका मतलब लगभग यह है कि हम हिंसा के स्तर पर गृह युद्ध चला रहे हैं। आन्ध्र आज इस्पात कारखाने के लिए गृह युद्ध कर रहा है, दक्षिण हिन्दी के खिलाफ गृह युद्ध कर रहा है और धर्मगुरू गौ वध के प्रश्न पर गृह युद्ध चला रहे हैं।

क्या ये मुद्दे गृह युद्ध योग्य हैं? गाँधी जी ने तो एक राष्ट्रीय युद्ध के खातिर अनशन किया। लेकिन अब हम धार्मिक पूर्वाग्रह के लिए, आर्थिक दुराग्रह के लिए, भाषीय हठ के लिए और प्रान्तीय जिद के लिए अनशन करने लगे हैं। गाँधी का अनशन एटमी भट्टी के फ्यूजन रिएक्शन की तरह है, वे विस्फोट के साथ गुंथे अणुओं को पृथक करते हैं। यह स्पष्ट है कि आज की परिस्थिति में अनशन दूसरों को दबाने या झुकाने का तरीका बन गया है। उसके सहारे अल्पमत बहुमत की फजीहत कर सकता है। वह उत्तेजना का एक कृत्रिम वातावरण बना देता है, जो इसलिए नहीं बनता कि समस्या ज्वलंत है, बल्कि इसलिए बनता है कि अमुक महाशय अनशन कर रहे हैं। यद्यपि इस बहाने वे ब्लेकमेलिंग कर रहे हैं। जयप्रकाश नारायण की शिकायत है, देश के लखपति, करोड़पति, धार्मिक संस्थान अकालग्रस्त आदमी को राहत पहुँचाने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। लेकिन अनबनों के कारण गाय देश की समस्या नम्बर 1 बन गई है। युद्ध की तरह अनशन भी देश की समस्त वाजिब प्राथमिकताओं को उलट देता है। वह दिवास्वप्न की दुनिया में रहने को हमें मजबूर करता है, जिसमें हम छटपटा उठते हैं। हाय, ये उन्मादी लोग अपने दुःस्वप्नों को सारे भारत पर लादने के लिए क्यों उतारू हैं।

हिंसा और युद्ध में समर्थ देश जानते हैं कि अंतिम अस्त्र का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। इसीलिए कोई एटम बम का उपयोग नहीं करता, क्योंकि उससे सर्वनाश हो जाएगा। लेकिन क्या अहिंसक लड़ाई लड़ने वाले जानते हैं कि उन्हें भी अंतिम अस्त्र के उपयोग से, उसकी महत्ता खत्म होती है तथा देश में अराजकता फैलती है। जो भारत दुनिया में अणु बम निषेध चाहता है, उसे अपने अन्दरूनी मामलों में पहले, अनशन–निषेध करना चाहिए। अनशनों में आजकल गाँधीवादी पवित्रता तो रह नहीं गई है, उलटे वे हिंसा के सस्ते तथा आसान पर्यायवाची बन गए हैं। इसीलिए अनशनों से हिंसा अच्छी है।

हर रोने वाला, छाती पीटने वाला, आत्महत्या की धमकी देने वाला सच्चा नहीं होता। कोई लड़का अगर इसलिए घर से भाग जाए कि उसे सिनेमा नहीं देखने दिया गया, तो इससे यह साबित नहीं होता कि सिनेमा देखना बहुत आदर्शवादी कार्य है। मामूली कहासुनी के बाद कोई अगर रेल की पटरी पर जाकर सो जाए, तो वह बदला लेने की बहुत निम्न भावना से प्रेरित होकर काम कर रहा है। अनशन भी इसी तरह का एक ब्लेकमेल है, जो कभी इस्पात कारखाने के लिए, कभी प्रांत निर्माण के लिए, कभी भाषा के लिए, तो कभी इस–उस के लिए काम में लाया गया है। वह प्रजातंत्र की भावना के प्रतिकुल है। अगर देश की राजनैतिक पार्टियां कभी एक आचरण संहिता बनाने के लिए राजी हो सकें, तो उसमें अनशन पर सबसे पहले पाबंदी लगाई जानी चाहिए।

प्रस्तुति : डॉ. सरोज कुमार,
मनोरम, 37, पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर
मो. : 094066 22290

वरिष्ठ व्यंग्यकार रोमेश जोशी

हुजूरे आला - जल्द लौट कर आने का वादा करके गए थे । पर अफसोस नहीं लौटे ...

ख्यात व्यंग्यकार रोमेश जोशी का पुणे में सोमवार को निधन हो गया। उनके अभिन्न मित्र और समकालीन व्यंग्यकार जवाहर चौधरी उन्हें अपनी इस टिपण्णी में याद कर रहे हैं।

ख्यात व्यंग्यकार रोमेश जोशी इंदौर से पूरी तरह स्वस्थ गए थे। वह एक रूटीन यात्रा थी, उनकी मुबंई के लिए। मुझे अच्छी तरह याद है, उस रविवार वे बोले थे, 'यार एक–दो इतवार शायद ना आ पाऊं, तुम लोगों को बहुत मिस करूँगा। इतवार के दिन सुबह से ही तुम लोगों की याद आने लगती है।' यह बात उन्होंने इंदौर राइटर्स क्लब (इराक) में कही थी, जहाँ वे हर रविवार शिरकत किया करते थे। अनायास मेरे मुँह से निकला था 'रूक जाओ ना, क्यों जाते हो ? इसके बाद उन्होंने वहाँ की कुछ व्यस्तताओं का जिक्र किया और हम लोग रूखसत हुए। यों वे भावुक नहीं होते थे, लेकिन उस दिन वे जाते हुए कुछ भावुक हो गए थे।

पिछले दो–ढाई साल से सक्रिय इंदौर राइटर्स क्लब को बनाने में रोमेशजी, कवि राजकुमार कुम्भज और अर्जुन राठौर संस्थापक थे। रोमेशजी इस क्लब की बैठक में आने के लिए रविवार का इंतजार शिद्दत से किया करते थे। यहाँ दोस्तों की उपस्थिति, रचनाओं का पाठ और उस पर चर्चा उनमें बच्चों की सी उमंग भर देता था। जाने क्या बात थी, उनकी शख्सियत में कि उनकी उपस्थिति तब भी महसूस होती रही, जब वे कॉफी हाऊस की अपनी सीट पर पिछले लगभग तीन माह से गैरमौजूद रहे थे। अपने खिलंदड़े और खुशमिजाज स्वभाव के कारण हमारे बीच वे एक जरूरी व्यक्ति थे और किसी के लिए भी यह यकीन करना नामुमकिन लग रहा है कि वे अब हमारे बीच नहीं हैं। रोमेश जोशी की मौजूदगी केवल शारीरिक नहीं थी, वे हमेशा अपने साथ एक जिंदादिली लिए होते थे और यह जिंदादिली वे मित्रों में प्रसाद की तरह बांटते रहते थे। उनके ठहाके और खिलखिलाहट देर तलक इराक के बंकर में मशीनगन की तरह सुनाई देती थी। उदासी या मनहूसियत हमेशा उनसे छिटक कर बैठती थी। उनके आते खुशी के जो बादल घुमड़ते तो भादों सा बरसते ही रहते।

यों मेरा उनसे परिचय बतौर लेखक वर्षो से रहा है। हमने कई बार साथ में रचनापाठ भी किया है। व्यंग्य को लेकर हममें खूब बहसें और असहमतियाँ होती रही हैं। हमने एक उपन्यास मिलकर लिखने का वादा भी किया था। हाल ही में उनका उपन्यास **'हुजूरे आला'** ज्ञानपीठ प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है, जिसको लेकर वे बहुत उत्साहित थे और इस समय अपने नए उपन्यास पर काम कर रहे थे। नियमित लेखन को उन्होंने साध लिया था, रोज लिख रहे थे। कहानियाँ भी खूब छप रही थीं। रोमेशजी अपने पाठकों के लिए दो व्यंग्य संग्रह **'यह जो किताब है'** और **'व्यंग्य की लिमिट'** छोड़ गए हैं। हम सब उनके लौटने का इंतजार कर रहे थे। खुद उन्होंने कहा था कि एक माह बाद लौट आऊंगा। मैं जानता हूँ इंदौर राइटर्स क्लब सहित पूरे इंदौर और व्यंग्य के पाठकों को उनका इंतजार बना रहेगा। वे यद्यपि चले गए हैं, किन्तु उनके लिखे हुए व्यंग्य तो मौजूद हैं। इसलिए तय है, व्यक्ति जाता है, किन्तु उसका लिखा हुआ बोलता है और वह कालजयी होता है।

❁❁

(वरिष्ठ व्यंग्यकार प्रो. जवाहर चौधरी (मो. 98263–61533), इन्दौर की कलम से एक संस्मरण....)